

त

1. त Pronominal-Stamm, von dem alle Casus in allen Zahlen und Geschlechtern, mit Ausnahme des nom. sg. masc. und fem., der von स (s. d.) gebildet wird, sich erhalten haben, गापा सर्वादि zu P. 1, 1, 27. der nom. acc. sg. neutr. तद् (Uq. 1, 130) vertritt den Stamm am Anf. von comp. und liegt auch तदोय zu Grunde. Neben तौ erscheint im Veda auch ता (z. B. RV. 1, 13, 8), neben तौनि auch ता (z. B. AV. 3, 13, 1), neben तैस् auch तैभिस् (z. B. AV. 1, 15, 3). 1) der (als cor. von य wer, welcher, das in der Regel dem demonstr. vorangeht), dieser; er: यो नः पृतन्यादप तं तमिद्धतम् RV. 1, 132, 6. 135, 4. 162, 19. 2, 11, 19. 13, 1. न तं वर्ता तर्विष्या अस्ति तस्याः 5, 29, 14. VS. 3, 45. अद्रोक्षिषैव भूतानामल्पद्रोक्षेण वा पुनः । या वृत्तिस्तां समास्थाय विप्रो जीविदनापदि ॥ M. 4, 2. यद्यस्य सो ऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयमाविशेत् 1, 29. यद्येन युज्यते लोके बुधस्तत्तेन योजयेत् Hir. 1, 47. सर्वे तस्यादता धर्मा यस्येते त्रय आदताः M. 2, 234. 3, 106. 4, 228. सरस्वतीदृषद्वत्येर्देवनद्योर्यदत्तरम् । तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥ 2, 17. यस्मिन्देशे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्त्रयः । राज्ञश्चाधिकृता विद्वान्ब्रह्मणास्तां सभां विदुः ॥ 8, 11. मया तन्न भद्रं कृतं यदत्र मारुत्तमे विश्वासः कृतः Hir. 12, 10, v. l. यद् dass — तन्मया प्रीतिमता युवयोरनुज्ञातम् Çāk. 63, 3. पृष्ठमासादनं तद्यत्परोक्षे दोषकीर्तनम् H. 268. येषां तु यादृशं कर्म भूतानामिह कीर्तितम् । तत्तथा वो ऽभिधास्यामि M. 1, 42. यथा विशोका गच्छेयम् — तत्कुरु N. 12, 79. 18, 16. तन्न ज्ञाने किम् ich weiss nicht, was Hir. 9, 7. अथ एव ससर्जदौ तामु वीजमवामृजत् M. 1, 8. Bisweilen müßig: आदित्या वा असुरान्कृत्वा वैरदेयादीषमाणास्ते देवान्प्राविशन् Kāṭh. 28, 6. प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा स रिरिचान इवामन्यत 29, 9. अरुन्तितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम् । तमाहुः सर्वलोकस्य समयमलकारकम् ॥ M. 8, 308. पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्वैवमिति कथ्यते Hir. Pr. 32. कर्मणा तेन मरुता देवा इन्द्रपुरोगमाः । सदेवर्षिगणास्तुष्टा राघवं ते ऽभ्यपूजयन् ॥ R. 1, 1, 88. Çāk. 73. तस्य सीदति तद्राष्ट्रम् M. 8, 21. — अनुनेष्यति तं नृपम् R. 1, 8, 20. देव्या तथा सरु mit der d. i. seiner Gemahlin Ragh. 3, 70. वा ते शार्ङ्गरवमिश्राः Çāk. 82, 1. तस्याय योगानन्दस्य (N. pr.) Kāṭh. 5, 79. In Verbindung mit dem pron. der 1sten und 2ten Person, mit andern demonstr. und mit dem relat.: तस्य — मम R. 1, 45, 4. तस्य मन्दस्य (sc. मे) N. 13, 10. ते वयम् MBh. 1, 6415. 3, 2697. ते (sc. वयम्) प-

ञ्चलस्य काप्यस्य गृह्णन्ति Çat. Br. 14, 6, 2, 1. तं वा RV. 1, 131, 2. 3, 9, 6. 9, 26, 6. तस्य ते 9, 65, 9. तस्मिंस्वपि Kṛnop. 18. ते (sc. यूपम्) यतधम् MBh. 5, 5937. ता वाम् RV. 1, 118, 10. 10, 132, 2. ते भवत्तः R. 1, 57, 19. तदिदम् Bāṅh. 1, 9, 2, 25. Daç. 1, 11. R. 1, 3, 4. 6, 84, 16. Çāk. 110, 17, v. l. यद् — तदिदम् 27. (in der Stelle: इदं तत्प्रत्युत्पन्नमिति स्त्रीणामिति यदुच्यते dies ist das, was 67, 23 ist इदम् praed.; vgl. 186) तौ — इमौ Hip. 1, 38. येषाम् — त इमे N. 9, 19. तदेतदाख्यानम् Air. Br. 7, 18. तस्मिन्नेतस्मिन्नपौ Çat. Br. 14, 9, 2, 14. R. 1, 56, 24. 4, 38, 46. Daç. 1, 30, 2, 56. यो तां अयम् — ताम् MBh. 7, 427. यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम् । तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते ॥ M. 1, 11. Bhag. 18, 37, 38. Wiederholt dieser und jener, mannlich, verschieden: तामु तास्विक योनिषु M. 12, 74. तेषु तेषु च कृत्येषु तत्तदङ्गं विशिष्यते 9, 297. क्लेशाश्च विविधास्तांस्तान् 12, 80, 87. SUND. 1, 34, 2, 21. Sāv. 6, 20. तं तं देशं जगाम ह 1, 38. R. 4, 61, 8. Ragh. 1, 47. प्रारब्धतत्क्रियाः BHART. 3, 45. KATH. 12, 124. 26, 243. resp. dieser oder jener: तिलतैलेन संस्त्राय विष्णुं वा शिवमेव वा । स याति तत्तत्साहचर्यम् Verz. d. Oxf. H. 10, a. N. 2. तैव तैव यथा निवृत्तः auf demselben Wege R. 3, 50, 28. In Verbind. mit dem relat. welcher immer, der erste beste, jeglich: विभियाद्यस्मात्स्मात्प्रतिप्रकृतम् M. 4, 191. यस्मिंस्तस्मिन्कुले जाताः MBh. 13, 1674. यद्वा तद्वा परद्रव्यम् dieses oder jenes M. 12, 68. यस्य वा तस्य वा कन्या HARIV. 5940. यद्वा तद्वास्तु Dhāt. 75, 9. यद्वा तद्वा भाषताम् zur Erkl. von प्रलयतु Sch. zu Çāk. 23, 14. Das wiederholte demonstr. in Correl. mit dem wiederholten relat. welcher immer, wer immer — der: यद्यत्परवशं कर्म तत्तद्यत्नेन वर्जयेत् M. 4, 159. 2, 236. 3, 231. 275. Bhag. 3, 21. N. 5, 11. Çāk. 141. यद्यस्य विक्रितं चर्म यत्सूत्रं या च मेखला । यो दण्डो यच्च वसनं तत्तदस्य व्रतेष्वपि ॥ M. 2, 174. यद्यद्वि कुरुते किञ्चित्तत्कामस्य चेष्टितम् 4. यत्किञ्चित् — तत्तत् SUND. 3, 13. येन केनचिदङ्गेन — तत्तत् M. 8, 279. यत्किञ्चित् — तत्सर्वम् 3, 191. 7, 94. 95. 9, 218. यत्किञ्चित् — तदपि 3, 273. यत्किञ्चित् — तत् 4, 117. 5, 24. — तद्यथा damit verhält es sich wie folgt so v. a. nämlich (vgl. तथा हि, welches hier auch als v. l. erscheint) Çāk. 21, 7. तत्प्रथमं, तद्वितीयं u. s. w. der dieses zum ersten, zweiten Male thut P. 6, 2, 162. अतद् nicht das Bhāg. P. 7, 7, 23. — 2) n. a) das so v. a. die Welt (vgl. इदम्): न-